www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 10, 1-4

Article ID: 221

ग्रामीण क्षेत्र में आय एवं रोजगार सृजन में गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों की भूमिका

पुखराज सिंह,
ललित कुमार वर्मा* एवं
अरुण सोलंकी

कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
जनता वैदिक कालिज, बड़ौत,
बागपत (उ० प्र ०)-250611

चीनी उद्योग, कपास उद्योग के बाद भारत में प्रमुख कृषि आधारित उद्योगों में से एक है, जो वैश्विक एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में गर्व का स्थान रखता है। गुड़ प्रसंस्करण इकाइयाँ ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या में लोगों को आय एवं रोजगार के वैकल्पिक स्रोत उपलब्ध कराती हैं। भारत विश्व में गन्ने के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। देश में लगभग 4.75 मिलियन हेक्टेयर भूमि पर गन्ने की खेती की जाती है, जिसमें लगभग वार्षिक 431.81 मिलियन टन गन्ना उत्पादन होता है। गन्ने का भारतीय कृषि एवं राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में गन्ने की महत्वपूर्ण भूमिका है यह चीनी सहित 25 से अधिक प्रमुख उद्योगों को जैसे – गुड़, खांडसारी, शराब, कागज, रसायन, तथा पशु चारा उत्पादन आदि के लिए कच्चा माल प्रदान करता है। विश्व स्तर पर गन्ना चीनी (80%) का मुख्य स्रोत है। चीनी के रस का उपयोग सफेद चीनी, ब्राउन शुगर (खांडसारी) और गुड़ बनाने के लिए किया जाता है। गुड़ के महत्व को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचाना गया है। विश्व के कुल उत्पादन का 60% से अधिक गुड़ का उत्पादन हमारे देश में होता है। गुड़ के प्रमुख उत्पादकों के रूप में हमारे देश को दुनिया में अग्रणी व्यापारियों एवं निर्यातकों के रूप में जाना जाता है।

चित्र-1 : मंडी में बिक्री के लिए तैयार गुड़

गुड़ एक प्राकृतिक एवं पारंपरिक स्वीट (मिठाई) है, जिसे गन्ने के रस की सांद्रता से बनाया जाता है। गुड़ और खांडसारी चीनी हमारे देश के ग्रामीण क्षेत्र में पाए जाने वाले प्रमुख कृषि-प्रसंस्करण उद्योगों में से हैं। गुड़ प्रसंस्करण प्रमुख रूप से गन्ना बहुमूल्य क्षेत्रों या ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित होते है, जो आमतौर पर आकार में छोटे होते हैं तथा संयंत्र की मशीनरी स्थानीय कारीगरों या इंजीनियरिंग कार्यशालाओं द्वारा बनाई जाती है।

गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों से क्षेत्रीय रोजगार का सृजन/ Regional Eemployment generation through Jaggery Processing Units:

देश में उत्पादित कुल गन्ने का लगभग 50 प्रतिशत अर्थात लगभग 8 मिलियन टन गुड़ के निर्माण के लिए उपयोग किया जाता है। यह कुल ग्रामीण आबादी के 7.5 प्रतिशत से अधिक के लिए अप्रत्यक्ष रोजगार तथा 5 लाख कुशल और अकुशल श्रमिकों को प्रत्यक्ष रोजगार देकर ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (एस.पी. सिंह, 2007)। पिछले दो वर्षों में कोविड-19 महामारी के कारण बड़ी संख्या में श्रमिकों ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी नौकरी खो दी है। आमतौर पर उन प्रवासी श्रमिकों के लिए जो ग्रामीण क्षेत्रों में अपने घर वापस आ गए हैं। इन परिस्थितियों में, गुड़, खांडसारी, एवं चीनी उद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

चित्र-2 : कृषि-प्रसंस्करण इकाई पर कार्य करते हुए प्रवासी श्रमिक

गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों की उपयोगिता / Utility of Jaggery Processing Units:

आमतौर पर यह धारणा है कि गुड़ केवल गरीबों की मिठाई है। हालांकि, समाज के लगभग सभी वर्गों में इसका काफी सेवन किया जाता है। ऐसा अनुमान है कि ग्रामीण क्षेत्रों में मिठास की दो-तिहाई जरूरत गुड़ से ही पूरी होती है। गुड़ पर्यावरण के अनुकूल स्वीट (मिठाई) है जो देश में मिठास की लगभग 40 प्रतिशत मांग को पूरा करता है। आजकल कोविड-19 महामारी दुनिया के लिए एक बड़ी चुनौती है, लेकिन गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों के लिए अधिक अवसर हैं क्योंकि लोग अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता (immunity)को बढ़ाने के लिए अन्य उत्पादों के साथ गुड़ उत्पादों का उपयोग कर रहे हैं। अधिकांशतया गुड़ सर्दियों के मौसम में उपभोग किया जाता है लेकिन इस कोरोना वायरस महामारी के कारण इसका उपयोग गर्मियों के मौसम में भी भारतीयों के साथ–साथ विश्व के अन्य देशों में भी किया जा रहा है। इस प्रकार गुड़ उद्योग अत्यधिक महत्व और प्रासंगिकता का उद्योग बना हुआ है।

चित्र-3 : गुड़ बनाने की प्रक्रिया समझाता हुआ करीगर

गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों के लाभ/ Advantages of Jaggery Processing Units:

भारतीय कृषि को घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में उपभोक्ताओं को जोड़ने में गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्राय: गुड़ प्रसंस्करण इकाइयां, प्रसंस्करण इकाइयों और गन्ना उत्पादको के मध्य महत्वपूर्ण संबंध स्थापित करती हैं। मुख्य रूप से, गुड़ प्रसंस्करण इकाइयाँ गन्ने के अधिकतम उपयोग का नेतृत्व करती हैं तथा दूसरा गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों एवं गन्ना उत्पादन के बीच बैकवर्ड फॉरवर्ड लिंकेज (Backward Forward Linkages) के माध्यम से अर्थव्यवस्था में आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि करती है। यह ग्रामीणो के लिए रोजगार बढ़ाने के माध्यम से खाद्य सुरक्षा, कृषि विकास को मजबूत करने जैसे सामाजिक क्षेत्र पर सकारात्मक परिणाम प्रदान करती है। गुड़ प्रसंस्करण इकाइयां के बाजार के विकास से सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों (socio-economic activities) के साथ-साथ समावेशी तथा आर्थिक विकास में वृद्धि हुई है।

चित्र-4 : गुड़ की पेडी बनाते हुए करीगर

गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों के सामने आने वाली बाधाएं या चुनौतियां/ Constraints or challenges faced by Jaggery Processing Units:

गन्ना किसानों को उनके उत्पादों का लाभकारी मूल्य प्रदान करना देश के सामने सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। यह चुनौती तभी हासिल की जा सकती है जब गुड़ की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए गुड़ प्रसंस्करण स्तर एवं गन्ने के मूल्यवर्धन (value-addition) को बढ़ाया जा सके। यह दुर्भाग्य की बात है कि गुड़ निर्माताओं पर करों की लगातार बढ़ती विविधता का बोझ है - मंडी समिति कर, उत्पाद शुल्क तथा अन्य कर। हालांकि खांडसारी को उत्पाद शुल्क से छूट दी गई है, लेकिन गुड़ पर उत्पाद शुल्क लगाया गया है। प्राय: मौसमी उत्पाद होने के कारण गुड़ को ऑफ सीजन में आपूर्ति के लिए कोल्ड चेन की जरूरत होती है। परन्तु, भारत में 'सस्ती' कोल्ड स्टोरेज और कोल्ड चेन का पूर्ण अभाव है। जबकि गुड़, खांडसारी एवं चीनी का उत्पादन केवल नवंबर से मार्च तक ही होता है जबकि उपभोक्ताओं द्वारा वर्ष भर माँग रहती है।

निष्कर्ष/ Conclusion:

प्राय: गन्ने का उपयोग मुख्य रूप से तीन उत्पादों गुड़, खांडसारी और चीनी को संसाधित करने के लिए किया जाता है। गुड़ उद्योग हमारे देश में सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रामीण आधारित कुटीर उद्योगों में से एक रहा है। यह बेरोजगार ग्रामीण लोगों को रोजगार प्रदान करता है। गुड़ प्रसंस्करण इकाइयाँ एक पारंपरिक और श्रम प्रधान कुटीर उद्योग हैं। इस प्रकार गुड़ प्रसंस्करण इकाइयां ग्रामीण क्षेत्र से प्रच्छन्न बेरोजगारी को दूर करने में सहायक हो सकती हैं। हाल के रुझान से पता चलता है कि आजकल कोविड-19 महामारी दुनिया के लिए एक बड़ी चुनौती का मुद्दा है लेकिन गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों के लिए काफी अवसर हैं क्योंकि लोग अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए अन्य उत्पादों के साथ गुड़ उत्पादों का भी उपयोग कर रहे हैं। इससे निश्चित रूप से ग्रामीण क्षेत्र में गुड़ प्रसंस्करण इकाइयों को बढ़ावा मिलेगा साथ ही साथ अधिक प्रसंस्करण इकाइयां होने से ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार भी बढ़ेगा। परिणामस्वरूप, ये ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता करेगी।

संदर्भ सूची/ References:

- चौथा अग्रिम अनुमान (17 अगस्त, 2022). अर्थशास्त्र और सांख्यिकी निदेशालय, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.
- मदन, एचके, जायसवाल यूके, कुमार जेएस, खन्ना एसके (2004). ग्रामीण क्षेत्रों के लिए गुड़ (गुड़) बनाने के संयंत्र में सुधार. *जर्नल ऑफ़ रूरल टेक्नोलॉजी* 1:194-196.
- कुम्भर, वाई.एस. (2016). कोल्हापुर में गुड़ (गुड़) उद्योग पर अध्ययन, *इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल* (आईआरजेईटी) खंड: 03**(02)**, 590-594.
- द्विवेदी के.ए. (2010). गुड़ उद्योग पर एक अनुभवजन्य अध्ययन, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद, 12 (03).
- गुड़ बनाना: कुटीर उद्योग की चुनौतियाँ, https://www.dhampurgreen.com/blogs/dhampur-speaks/jaggery-making-challenges-of-this-cottage-industry